ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. राजरानी शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर सत्यवती महाविद्यालय
Email: rajrani@satyawati.du.ac.in

देशभक्ति की सामान्य मावीय वृत्ति स्वचेतन होकर राष्ट्रीयता का रूप ग्रहण करती है। हिन्दी के आधुनिक युग केजनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से राष्ट्रीयता का बोध आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रारम्भ होता है। सन् 1884 में बलिया में व्याख्यान देते हुए भारतेन्दु जी कहते हैं – ''इस महामंत्र का जाप करो जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे हिसी रंग, किसी जाति का क्यों न हो वह हिन्दु है।'' हिन्दु की सहायता करो। बंगाली, मराठा, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्रहमों, मुसलमान सब एक का हाथ एक पकड़ों। कहना पड़ेगा कि जिस धर्मनिरपेक्षा और राष्ट्रीयता की नींव भारतीय संविधान के रूप में 26 जनवरी 1950 को पड़ी उसकी परिकल्पना भारतेन्दु ने बहुत पहले कर ली थी।

''अँगरेज राज सुख साज सजै सब भारी,
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी''

से आरम्भ होती देश भक्ति की भावना मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' और माखनलाल चतुर्वेदी की 'मुझे तोड़ लेनाबनमाली उस पथ पर तुम देना फैक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक' कविताओं में विकसित होती है। जयशंकर प्रसाद की 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा, समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती' और अरूण यह मधुमय देश हमारा'' गीतों में, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'राम की शक्ति पूजा' और 'तुलसीदास' कविता जिसमें कवि कहते हैं –

''अन्याय जिधर है, उधर शक्ति'। कहते छल–छल,
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके हगजल''

राम की इस हताश–निराश मनः स्थिति पर जाम्बवान राम को 'शक्ति मौलिक कल्पना' करने का परामर्श देते हैं। कविता के अंत में –

होगी जय–होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वंदन में लीन

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

मानवीय आत्म शक्ति का राष्ट्रीयता में समाहार इस कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है। बाद में अज्ञेय ने राष्ट्रीयता को मूल्य–चेतना के रूप में स्वीकार करते है जब वे देश के संविधान को 'आलोक–मजूबा' का बिम्ब देते है। नई कविता के लिए राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना, जान–अस्मिता की भाव–भूमि पर दृष्टिगत होती है। मुक्तिबोध की 'अँधेरे में और रघुवीरसाहाय की 'मेरा प्रतिनिधि' इसी प्रकार की जन–समूह के भावनाओं के उद्वेलन की कविताएँ हैं। यहँ पहुँचकर राष्ट्रीयता की भावना में तत्वतः अन्तर आ जाता है। पहले की कवियों के लिए जहाँ राष्ट्रीय चेतना से अभिप्राय देश को विदेशी शासन और दासता से मुक्ति दिलाना है, वहाँ नयी कविता के कवियों के लिए राष्ट्र को सौहार्द्रपूर्ण बनाना, विभिन्न समस्याओं को दूर कर समरस बनाना राष्ट्रीय चेतना है। मुक्तिबोध चाँद का मुँह टेढ़ा है और रघुवीरसहाय की आत्महत्या के विरूद्ध कविताओं में राष्ट्रीय–चेतना जन–चेतना में रूपांतरित हो रही है।

जयशंकर प्रसाद और निराला आदि छायवादी कवियों पर बंगला साहित्य का प्रभाव पड़ा है। चूँकि भारत में पुनर्जागरण और हिन्दी नवजागरण का सम्बन्ध बंगाल से है इसलिए बंगला साहित्य ने तत्कालीन हिन्दी साहित्यकारों पर प्रभाव डाला है। छायावाद की प्रतिनिधि रचना 'कामायनी' में सुख–दुख की भावनाओं से ऊपर उठकर, क्रिया और कर्म में समन्वय स्थापित कर सर्जनात्मक मानवीय संस्कृति के विकास पर कृति का अंत होता है–

शक्ति के विधुत्कण, जो व्यस्त विकल बिखरे, हों निरूपाय
समन्वय उसका करे समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय।

इन पंक्तियों में मानव की समस्त शक्तियों को एकत्र कर मानवता को विजयिनी बनाने की परिकल्पना की गई है। कामायनी में 'मनु चिंता से आनंद की यात्रा करते हुए, एक–दूसरे के प्रतिकूल भाव–भूमियों को एक साथ जोड़ते हुए, द्वंद्व से समसरता और समरसता से आनंद प्रक्रिया का समन्वय कर दिया है–

समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती, आनंद अखण्ड घना था।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

जयशंकर प्रसाद की दूसरी महत्वपूर्ण काव्य–कृति है– 'लहर'। इस कृति में–

1. आँखों में अलख जगाने को, यह कौन भैरवी आई है
2. बीती विभावरी जाग री
3. अब जागो जीवन के प्रभात
4. जगती की मंगलमयी ऊषा बन, करूणा उस दिन आई थी

ये चार कविताएँ है जो सूर्योदय या उषाकालीन है जिनमें मुख्य स्वर उद्‌बोधन का, जागरण का है। मानव को प्रेरित किया गया है कि अज्ञान, कायरता, दुख और वेदना की रात्रि का समापन है और ज्ञान, निडरता, सुख और मिलन की उषा का उदय है। वस्तुतः प्रसाद की इन कविताओं को सांस्कृतिक उद्‌बोधन के रूप में लिया जाना चाहिए।

इन चारों कविताओं के अतिरिक्त कुछ और कविताएँ भी है जिनके शीर्षक में नहीं अपितु कविता के मध्य या अंत में भोर का वर्णन है–

लेचल वहाँ भुलावा देकर, मेरे नविक धीरे–धीरे
श्रम–विश्राम–क्षितिज बेला से, जहाँ सृजन करते मेला से
अमर जागरण उषा ायन से, बिखरती हो ज्योति घनी रे[1]

यह वही कविता है जिसकी पहली पंक्ति को पढ़कर आलोचकों ने उन्हें पलायनवादी सिद्ध कर दिया जबकि इस कविता में प्रसाद दल–कपट से पूर्ण वातावरण को छोड़ निश्छल प्रेमयुक्त वातावरण में रहने, दीन–हीनों के प्रेमी, जगत को सत्य मानने वाले एंव नवजागरण एवं नव–निर्माण की प्रेरणा दी है। एक और कविता दृष्टव्य है–

फैलाती है जब उषा राग, जंग जाता है उसका विराग
वंचकता, पीड़ा, घृणा, मोह मिलकर बिखेरतें अंधकार

[1] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 340

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

धीरे से वह उठता पुकार, मुझको न मिला रे कभी प्यार[2]

इन पक्तियों में भी प्रभात बेला की उषा अपनी मधुर लालिमा के रूप में सर्वत्र अनुराग और जागरण का संदेश दे रही है।

छाया–पथ में विश्राम नहीं, है केवल चलते जाना
मेरा अनुराग फैलने दो, नभ के अभिनव कलरव में
जाकर सूनेपर के तम में, बन किरन कभी आ जाना[3]

इन पक्तियों में कवि जीवन की सुखमयी रात्रि से रुकने का आग्रह करता है क्योंकि इस रात्रि में विश्राम नहीं है। कुछ क्षणों पश्चात प्रातः होते ही प्रेम की लालिमा प्राची में फैलेगी। इन पंक्तियों में भी अंधकार की शून्यता को समाप्त कर सूर्य रूपी नव जागरण का आह्वान है।

जवा–कुसुम–सी ऊषा खिलेगी, मेरी लघु प्राची में,
अंधकार का जलधि लाँघकर आवेंगी शशि–किरने

इन पक्तियोंमें भी अंधकार को चीरती हुई चन्द्रमा की किरणों से चाँदनी फैलाने का आग्रह किया जा रहा है।

'लहर' की कविताओं की सांस्कृतिक चेतना की बात हो और निम्नलिखित कविता का स्पर्श न हो यह असंभव है। इन पंक्तियों में कवि अपने मन रूपी मानसरोवर से कहते हैं कि तू ऐस हँस जिसमें न मौत का भय हो, न कोई दुख हो, न द्वेष हो, न कोई भयभीत हो। समरसता का, जीवन की निर्मलता का, पारदर्शिता का, मानवीय कल्याण की गहराई का चिन्तन प्रसाद जैसा युगदृष्टा ही कर सकता है–

ओ री मानस की गहराई

हँस ले भय, शोक प्रेम या रण, हँस ले काला पर ओढ़ मरण

---

[2] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 361

[3] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 362

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

हँस ले जीवन के लघु–लघु क्षण, देकर निज चुम्बन के मधुकण

नाविक अतीत की उतराई[4]

लहर में चार लम्बी कविताएँ भी संकलित हैं– 'अशोक की चिन्ताः 'शेरसिंह का शस्त्र–समर्पण', 'पेशोला की प्रतिध्वनि' और 'प्रलय की छाया' 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' में सिक्खों और अंग्रेजों के बीच 1849 में हुए युद्ध में सिक्खों की दुखद पराजय के मार्मिकांकन के साथ–साथ सिक्खों की रणसंगिनी तलवार, उनके शौर्य एवं पराक्रम की भी झाँकी है। इस कविता में स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए शेरसिंह के सेनापतित्व में अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध का वर्णन है। इस कविता में मातृभूमि की रक्षा के लिए पुकार है, रणसंगिनी तलवार है, शत्रु सेना का हाहाकार है और देश पर मर मिटने की ललकार है–

अरी रण–रंगिनी

सिक्खों के शौर्य भरे जीवन की संगिनी
कपिशा हुई थी लाल तेरा पानी पान कर
दुर्मद दुरन्त धर्म दस्युओं की त्रासिनी
निकल–चली जा तू प्रतारणा के कर से

निम्नलिखित पक्तियों में शेरसिंह सिक्ख योद्धाओं की प्रशंसा कर रहे है कि वे जिए तो सम्मान और गौरव के साथ बलिदान दिया तो देश के सम्मान के लिए–

सिक्ख थे सजीव, स्वत्व रक्षा में प्रबुद्ध थे
जीना जानते थे, मरने को मानते थे सिक्ख[5]

[4] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 368

[5] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 375

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर भला किसका कलेजा न पिघलेगा जिनमें सिक्ख सैनिकों के मृत्यु की गोद में उसी भाँति समाने का वर्णन है जैसे बचपन में माँ की धमकियों से बालक सो जाता है। वे अपनी–अपनी माताओं का दूध भरी, दूध के समान पवित्र दुलार भरी गोदों को सूना कर मृत्यु की आगोश में समा गए–

''रूप भरी, आशा भरी, यौवन अधीर भरी,
पुतली प्रणयिनी का बाहुपाश खोलकर,
दूध भरी, दुध सी दुलार भरी माँ की गोद,
सूनी कर सो गए।[6]

वस्तुतः यह कविता उन कविताओं में से एक है जो छायावाद को 'शक्ति काव्य' सिद्ध करती है, राष्ट्रीयता का उदघोष करती है और प्रसाद को पलायनवादी कहने वाले आलोचकों को करारा जवाब देती है।

'लहर' की एक और लम्बी कविता 'पेशोला की प्रतिध्वनि' में प्रसाद न भारतीय इतिहास के गौरवशाली प्रसंग का स्मरण करके तत्कालीन आधुनिक गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत ी दयनीय स्थिति पर शोक प्रकट किया है। महाराणा प्रताप की जन्मभूमि उदयपुर में स्थित पेशोला झील को देखकर कवि प्रसाद का हृदय रो उठता है। उस झील से प्रसाद जी को सुनाई पड़ती है कि गुलाम भारत में कोई महाराणा प्रताप जैसा वीर नहीं है जो अपने शौर्य, पराक्रम, साहस, वीरता, धैर्य एवं स्वाभिमान से देश को स्वतन्त्र करा सके। यह कविता भारतीयों में देशभक्ति और राष्ट्रीयता की अलख जगाने वाली है। स्वेदश–प्रेम, त्याग, बलिदान एवं कर्तव्यपरायणता की जाग्रत करने वाली है। इस कविता को जब–जब, जिन–जिन संदर्भों में पढ़ा–सुना जाएगा यह तब–तब प्रासंगिक बनी रहेगी–

''कौन लेगा भार यह? जीवित है कौन?
साँस चलती है किसकी, कहता है कौन ऊँची छाती कर,
मैं हूँ–मैं हूँ–मेवाड़ में[7]

---

[6] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 377

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

****

आज भी पेशोला के, तरल जल मण्डलों में,
वही शब्द घूमता–सा, गूँजता विकल है
किंतु वह ध्वनि कहाँ, गौरव की काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़! किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ[8]

प्रसाद के 'आँसू' को आलोचक छायावादी परिदृश्य के अंतर्गत विरह–काव्य के रूप में स्वीकार करते हैं। इस रचना में सामान्य दुख, द्वन्द्व और संघर्ष से ऊपर उठकर विश्व कल्याण की प्रतिज्ञा है। 'कामायनी' में सुख–दुख के द्वन्द्व से ऊपर उठकर आनन्द की स्थिति है, 'लहर' में व्यक्तिगत–चेतना के स्थान पर सामूहिक चेतना के जागरण का स्वर है, 'आँसू' में वेदना का प्रकार हो जाता है 'मैं' 'हम' में परिणत हो जाता है। 'आँसू' के अन्तिम भाग में पहुँचकर कवि का विरह भाव सार्वभौमिक वेदना में रूपांतरित हो जाता है जहाँ जहाँ प्रकृति में पीड़ा है–

मानस कुमुदों का रोना, बौने जलनिधि का हाहाकार मचाना ज्वालामुखियों का मुँह सिए ताप झेलना, मधुकर की कली से मनमानी फिर चिर–वंचिता भूखों की प्रलय दशा वहाँ–वहाँ कवि की मानवता जाग्रत हो जाती है। यह वेदना का अद्वैत रूप है–

''सब का निचोड़ लेकर तुम, सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रयात हिमकन–सा, आँसू इस विश्व–सदन में।''[9]

---

[7] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 380

[8] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 380

[9] जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाड्.मय भाग–1
कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद, पृ. 332

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

'आँसू' की इस सघन वेदना में कहीं निराशा–हताशा का स्वर नहीं है, उसमें है मानवता की स्थापना, सर्वकल्याण में आस्था। वेदना के सर्वव्यापी प्रसार के आलोक से पृथ्वी का निश्चित ही कल्याण होगा। 'आँसू' के अन्तिम खण्ड में विरह का सार्वभौमिक रूप अंकित है जहाँ पीड़ा और कष्ट के विविध दृश्यों का चित्रण करने के उपरान्त कवि संकेत देता है कि समूची सृष्टि की पीड़ा उसने स्वयं झेली है और हर पीड़ा में उसकी अपनी व्यथा है–

''सूखी सरिता की शैया, वसुधा की करूण कहानी।
कूलों में लीन न देखी, क्या तुमने मेरी रानी?

अतः जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्र जागरण के साथ है समग्र चेतना का जागरण और आह्वान है, व्यक्ति में निहित शक्ति के उद्घाटन का उपक्रम है। यह राष्ट्रीय नहीं अपितु सम्पूर्ण सांस्कृतिक जागरण का काव्य है। नवजागरण की पुनर्व्याख्या है, राजनीति नही संस्कृति की महता स्थापित की गई है।

संदर्भ ग्रन्थः

1. भारतेन्दु ग्रन्थावली, संपादक–ब्रजरत्नदास
   नगरी प्रचारिणी, काशी, सं. 2010
2. निराला ग्रन्थावली, संपादक–श्रीराम कृष्ण त्रिपाठी निराला
   राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि.–1983
3. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, प्रसाद वाङ्मय भाग–1
   कॉपीराइट रत्नशंकर प्रसाद
   लोकभारती, इलाहबाद, 1977

Copyright @ 2020 Authors